चतुर्थ अध्याय

भाव-पक्ष

मूलतः आधुनिक युग नवीन मूल्यों को स्थापित कर पुराने मूल्यों के विस्थापन का युग है । आज मनुष्य नया खोजने के प्रयास में हैं । परम्परागत रूढ़ियों, मान्यताओं, विश्वासों एवं मूल्यों का विघटन हो रहा है । नैतिक मूल्य टूट रहे हैं, आस्था का लोप हो रहा है । महानगरीय भीड़ में व्यक्ति खुद को अकेला और टूटा हुआ अनुभव कर रहा है । कुंठायें, प्रवंचना, अभाव, अतृप्ति, बेकारी, गरीबी, निरक्षरता, नग्नता, खोखलापन आज की आधुनिक कविता का रूप एवं स्वर बदल रहा है ।

अतः आधुनिककाल की मुख्य प्रवृत्तियों के रूप में जैसा कि गुजरात के आधुनिक हिन्दी काव्य की प्रवृत्तियाँ नामक विभाग में सूचित किया गया है - प्रकृति के प्रति गहरा प्रेम और तज्जनित अनेक प्राकृतिक चित्र; सामान्य मान्यता, नीति और आदर्श, राष्ट्रीय सांस्कृतिक कविता; वैयक्तिकता, बौद्धिकता का आग्रह, वेदांत एवं आध्यात्म दर्शन; लोकगीतों, धुनों एवं शैली का अनुधावन; राजनैतिक संदर्भों से साक्षात्कार, व्यंग्य यथार्थता, जीवन की गहन दार्शनिकता, चिन्तन की गहराई, अनुभूति की प्रांजलता, भ्रष्टाचार और अनीति के प्रति आक्रोश, आतंकवाद आदि को हम देख सकते हैं ।

प्रकृतिनिरूपण :

गुजरात की आधुनिक हिन्दी कविता का प्रकृति निरूपण बड़ा ही सूक्ष्म, विस्तृत और गहरा है जबकि प्राचीन कवि प्रकृति का निरूपण केवल आलंबन एवं उद्दीपन या उपदेश के लिए करते थे । आधुनिक हिन्दी कविता का प्रकृति निरूपण प्राचीन कवियों की प्रकृति निरीक्षण शक्ति की तुलना में अत्यन्त सूक्ष्मातिसूक्ष्म रहा है । आधुनिक हिन्दी

काव्य के प्रकृति निरूपण की कुछ विशिष्टता है । उसमें हमें नावीन्य परिलक्षित होता है । कोई भी काव्य अपने तत्कालीन परिस्थितियों का आईना होता है । यही कारण है कि महात्मा गाँधीजी के प्रभाव से स्वातंत्र्य कामना हेतु स्वदेशी आन्दोलन हुआ और उसकी प्रतिक्रिया रूप अपनी जन्मभूमि के प्राकृतिक सौन्दर्य को महत्त्वपूर्ण स्थान मिलने लगा ।

साथ ही रवीन्द्रजी और महर्षि अरविन्द का लालन एवं उदात्त सौन्दर्य प्रभाव भी आधुनिक काव्य में प्रतीत होता है । हमें एक ओर विशिष्ट सौन्दर्यलक्षिता तो दूसरी ओर श्री अरविन्द के प्रभाव से अति-मानवीय सौन्दर्य परिलक्षित होता है ।

गुजरात के आधुनिक कवियों की प्रकृति निरीक्षणशक्ति अत्यन्त विस्तृत, गहरी एवं सूक्ष्म प्रतीत होती है । प्राचीन काव्य में प्रकृति का निरूपण आलंबन, उद्दीपन या उपदेश के हेतु तक ही सीमित था किन्तु आज वह रसात्मक बोध की भूमि पर खड़ा है । आज मार्क्सवाद (यथार्थवाद एवं प्रगतिवाद का पदार्पण हेतु) के प्रभाव से आधुनिक हिन्दी काव्य में प्रकृति का प्रतीकात्मक प्रयोग विपुल मात्रा में होने लगा है । साथ ही विषय-वैविध्य भी पाया जाता है । प्रकृति के माध्यम से देश-प्रेम की व्यंजना को बहुत ऊँचा स्थान प्राप्त हुआ है अर्थात् विविध काव्य रूपों के आविष्कार के साथ प्रकृति निरूपण के विविध दृष्टिकोणों का भी प्रादुर्भाव हुआ है । वैज्ञानिक विकास के परिणाम स्वरूप मनुष्य की बौद्धिकता जागृत हुई । जिज्ञासावृत्ति का विस्तार हुआ । वैयक्तिकता को बढ़ावा मिला । अतः प्रकृति-वर्णन के नये-नये आयाम खुले, बिम्ब एवं प्रतीक योजना में नूतनता का सन्निवेश हुआ और मनुष्य की सर्वग्राही अनुभूति की तीव्र अभिव्यक्ति हुई । पाश्चात्य साहित्य के अध्ययन के प्रभाव स्वरूप प्रकृति के साथ विशेष रागात्मक, निकटतम सम्पर्क से संपृक्त संबंध से प्रकृति की विराट चेतना सहज स्पष्ट हुई है ।

छायावादी युग की पलायनवादी प्रवृत्ति ने भी प्रकृति को ही प्राधान्य दिया और नई कविता ने वैज्ञानिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, बौद्धिक तथा अति यथार्थ-वादी प्रभावों को ग्रहण करते हुए, हिन्दी कविता को नवीन प्रयोगों से आकलित किया । फलतः प्राकृतिक उपादानों के प्रति ध्यान केन्द्रित हुआ और प्रतीकों, बिम्बों, लोक-साहित्य की धुनों, आंचलिक शब्दों आदि का समन्वय करते हुए वैयक्तिक मनोदशा एवं परिवेशों को अभिव्यक्ति मिली ।

आज प्रकृति के साथ साहित्य का रिश्ता आलंबन का रिश्ता है, उद्दीपन का नहीं । आधुनिक कविता में प्रकृति में आध्यात्मिकता का भी आरोप देखा जाता है । ईश्वर का स्थान आज मानवता ने ले लिया है । भजन पूजन के स्थान पर पीड़ित मानवता की सहायता और हमदर्दी प्रतिष्ठित हो चुकी है । प्राचीन धार्मिक विश्वासों और रूढियों के हिल जाने के कारण आज के साहित्यिकों ने आज के संसार को नई दृष्टि से देखने का प्रयत्न किया है ।[1]

अधिकार के स्थान पर कर्तव्य, वैभव और समृद्धि के स्थान पर क्रांति चारित्रिक उच्चता ने व्यक्ति के नये रूप में अधिक स्थान पाया । प्रकृति को इन कवियों ने इस वैज्ञानिक युग में नयी दृष्टि से देखा । प्रकृति के जीवन सत्य में मात्र बाह्य रूप दर्शन की भावना की जगह पर उसके अन्तःस्त्रोत का परिचय आधुनिक जीवन को मिला । प्रकृति जड़ न रहकर अपने चेतन अस्तित्व में मनुष्य मन को आकर्षित करने में समर्थ हुई । आधुनिक काल के कवियों ने आधुनिक काव्य को नयी समृद्धि प्रदान की । उन्होंने प्रकृति के सौन्दर्य एवं आन्तरिक शक्ति का नवीन परिचय दिया । उन्होंने अंधकार, जड़ता और जीवन विरोधी तत्वों से काव्य को उभारा और उसे यथार्थ दर्शन की ओर उन्मुख किया । फलतः प्रकृति में अधिक व्यापक आत्मीयता का भाव प्राप्त हुआ ।

आधुनिक कवियों ने अपनी निराशा, व्यापक शक्ति सौन्दर्य और सर्जक व्यक्तित्व को प्राप्त करने के लिए प्रकृति की गोद में शरण नहीं ली किन्तु अपनी कुंठा एवं गतिहीन जीवन की प्यास को शांत करने के लिए सामीप्य स्थापित किया ।

गुजरात के आधुनिक हिन्दी काव्य की यह विशेषता रही है कि इसने नये सत्यों को स्वीकार करते हुए भी अपनी परम्परा से शक्ति का स्त्रोत प्राप्त किया है । आधुनिक काल का मूल स्वर भाव के स्थान पर बौद्धिक अधिक है । मनुष्य की

---

1. हिन्दी साहित्य की भूमिका : डॉ० हजारीप्रसाद - पृ० 142

शक्तियों का भौतिक मूल्य आंकने वाली बुद्धि ने विज्ञान के नये विकास के प्रकाश में प्रकृति को बहुत नजदीक से देखा । विज्ञान ने प्रकृति के ठोस आवरण में छिपे हुए चेतन जीवन तत्व को प्रत्यक्ष रूप दिया । प्राचीन काल से चले आते हुए फूल, नदियाँ, पर्वत, नभ, जल, थल आदि को चेतनता मिली । उन्होंने प्रकृति को जीवित व्यक्तित्व के रूप में स्वीकार किया । प्रकृति का कलात्मक चित्र इस काल की रचनाओं में मिलता है । ये चित्र जीवन सापेक्ष है । अतः एक ओर इनमें सामाजिक जीवन-बोध और व्यापक मानवता का विकास मिलता है और दूसरी ओर इनके सहारे उच्चकोटि का कलात्मक सर्जन इस काल के हिन्दी काव्य को मिला है । इन कवियों ने हमारे जीवन-परिवेश के प्राकृतिक चित्रों को शब्द-रूप दिया है । आधुनिक कवि प्रकृति को जिज्ञासा, आत्मीयता, रागात्मक वृत्तियों के सहारे देखता है । यह अपने में सम्पूर्ण नया और अद्वितीय है ।

कविवर डॉ० अम्बाशंकर नागरजी ने प्रकृति चित्रों को बड़े ही सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया है । जैसे -

विगलित होता हिमगिरि
ज्यों रवि किरणों के
प्रखर ताप से
पिघल रहा था
तब पुलकित मुनिमन
वैसे ही अनुताप से ।[1]

- डॉ० नागर

यहाँ कविवर नागरजी ने रवि किरणों से विगलित होते हिमगिरि और अनुताप से पिघलित होते कवि मन को आमने-सामने रखकर प्रथम प्राकृतिक दृश्य के पार्श्व में व्यक्ति की मनोदशा की रमणीय व्यंजना की है ।

---

1. प्रम्लोचा : डॉ० अम्बाशंकर नागर

वायुयान के यातायात से दिखनेवाले श्वेत घनशावकों की शोभा भी दृष्टव्य है -

ऐसा लगता है जैसे कोई धुनिया
घूमता है रूई रेशम की
और पवन के पंखों पर चढ़
फिरते हैं फाहे रूई के
अथवा अर्क या कि
सेमल की कोई डोडी
टटक गई है
और उड़ रहे हैं उसके ही
छिटके रेशे ।[1]

प्रस्तुत उदाहरण में उड़ते रूई के फोहों तथा अर्क और सेमल के विकीर्ण रेशों के द्वारा कवि ने बादलों की शोभा का अंकन किया है । यहाँ कवि ने बहते घनों के प्रदगलों को घन-शावक कहकर उसे चाक्षुक, जीवंत एवं गतिपूर्ण बता दिया है ।

निम्नस्थ पंक्तियों में कवि ने प्रकृति के माध्यम से नारी सौन्दर्य के पार जाने की कोशिश की है । जैसे -

रूप की यह दूध धोई चाँदनी
बदल देती है स्वरूपों को प्रकृति के,
अर्थ देती है नये
जीवन - उषा को ।[2]

उषा, संध्या, दिन, रात, मेघ, नभ, सागर, दुर्वा, ओस, चन्द्र, पवन आदि के सप्तरंगी भावात्मक चित्रों को लिए इस कवि ने अलक्ष्य सौन्दर्य का सर्जन किया है । जैसे -

---

1. गुजरात : समकालीन हिन्दी कविता - डॉ० अम्बाशंकर नागर - पृ० 146
2. प्रम्लोचा - डॉ० अम्बाशंकर नागर - पृ० 66

निरख नभ में जा रही है चाँद की बारात
और भू पर चाँदनी छिटकी हुई अवदात
गंधवाही पवन प्रेरित सुरभि की यह वृष्टि
करती अतीन्द्रिय लोक की अद्भुत अपूरब सृष्टि ।[1]

श्री नरेश मेहता ने हिमानी प्रकृति के जीवंत चित्र उकेरे हैं -

हिम केवल हिम
मृगवर्णाएं धूप
देवकन्याओं सी हिम फिसल रही हैं,
चांदनियों की पारदर्शिका मलमल में
लावण्यमयी एकान्त द्रोणियाँ
अंग चुराती ।[2]

उन्होंने मेघों में कंपती बिजली और राम प्रतीक्षारत शबरी की (आरजू) अभिलाषा दोनों को एक साथ रखकर बड़ा ही सुन्दर चित्रण किया है -

कपिला तन सी जब बिजली
मेघों में कंप-कंप उठती
शबरी विभोर हो वन वन
अपने ठाकुर को गुनती ।[3]

यहाँ प्रकृति को अपनेआप में "सत्यम् शिवम् सुंदरम्" के रूप में प्रस्थापित किया गया है । जैसे -

थी विशाल कितनी हरीतिमा
शोभित थीं,पगवाटें
था विराट वट-वृक्ष खड़ा
फैलाएं वृद्ध जटाएँ ।[4]

---

1. चाँद चाँदनी और कैक्टस - डॉ० नागर
2. महाप्रस्थान - श्री नरेश मेहता - पृ० 38
3. शबरी - श्री नरेश मेहता - पृ० 34
4. शबरी - श्री नरेश मेहता - पृ० 15

यहाँ उन्होंने प्रकृति का बड़ा ही उत्कृष्ट मानवीकरण किया है -

वृत्त बनाकर तिरछे थे
उत्तर में सप्तर्षि तारे
गहरा नीला हो आया था
गम कुछ, क्षितिज किनारे ।[1] - श्री मेहता

वैसे ही यहाँ सजीवारोपण अलंकारों से अलंकृत कर बादलों को बे-लगाम घोड़े बताकर मनोहर चित्रण किया गया है -

आज के बादल, बेलगाम घोड़ों की तरह
दौड़ते हैं इधर-उधर, हिनहिनाते हैं गरजकर ।[2]
- डॉ० रामकुमार "गुप्त"

आधुनिक काल के प्रकृति-चित्रण में हमें प्रतीकों एवं बिम्बों का वैविध्य मिलता है । जैसे -

कासों के वन में है यादों की गंध
घाटी में गर्भवती ध्वनियों के गाँव
जोहड़ में फेंक मरी मछली को
काँटे में फंस रहा तट का विश्रान्त ।[3] डॉ० किशोर काबरा

या

बादलों की ओट में सोती किरण
धूप की परछाइयाँ होती हिरण
चांदनी तट पर खड़ी खामोशियाँ
चांदनी के दूध से धोती चरण ।[4] - डॉ० काबरा

---

1. शबरी - श्री नरेश मेहता - पृ० 10
2. "बेलगाम कल्पना" "बिंदियों के बोल" - डॉ० रामकुमार गुप्त - पृ० 36
3. घाटी में गर्भवती ध्वनियों के गाँव" "ऋतु है प्यास" - डॉ० किशोर काबरा -पृ० 14
4. महकते बादल गगन की डाल पर" "ऋतु है प्यास" - डॉ० किशोर काबरा - पृ० 38

सूर्यास्त के समय और तत्पश्चात् के रजनी समय को बड़ी ही उत्कृष्ट भाषा में न्याय दिया है । ठीक वैसे ही प्रकृति का बड़ा ही उत्कृष्ट वर्णन यहाँ काबराजी ने किया है जैसे -

आ गई है ठण्ड
कंपकंपी ओढ़े हुए दिन,
और ठिठुरन में सिमटकर थरथराती रात,
केसर साँझ, सोना प्रात
सीठा दर्द सीकर आ गई है ठण्ड ।[1] - डॉ० काबरा

कवि ने यहाँ ठण्ड का अत्यन्त दृश्यग्राह्य भाषा में वर्णन किया है । साथ ही दिन और रात के लिए सजीवारोपण अलंकार का प्रयोग किया है । अपनी स्थिति का साम्य प्रकृति के बादलों, तारे, पुष्पों, वृक्षों, किनारे, गंध, शिलाएँ आदि में पाकर आधुनिक कवि आनन्दानुभव करता है । उन्होंने प्रकृति का मानवीकरण किया अर्थात् जीवन रहस्य का सच्चा बोध हमें कराया है । जीवन रहस्य के बोध का मतलब है जीवन के सौन्दर्य सुख एवं नश्वरता का बोध। प्रकृति वर्णन द्वारा उजागर किया गया है । साथ ही प्रकृति के कमनीय और भयंकर दोनों पक्षों के सुन्दर चित्र कवियों की अन्तरानुभूतियों से रंजित होकर एक मनोहर व सौन्दर्य की सृष्टि करते हैं । जैसे -

है स्वरित शिलाएँ, वृक्ष सघन
बिखरे कण कण में मृदु जलकण
भीगी धरती की मदिर गंध
फूलों का सौरभ संग संग
भर गए दिशाओं में सत्वर
बहता समीर, लहरा अंचल
मुग्धा सी लजा गई चंचल ।[2] - कु० मधुमालती चौकसी

---

1. "ऋतुमती है प्यास" - डॉ० किशोर काबरा - पृ० 42
2. भाव निर्झर "नर्तन" - कु० मधुमालती चौकसी - पृ० 77

कु० मधुमालतीजी ने प्रकृति का नारी के रूप में जो सांग चित्रण किया है वह अपने आप में बड़ा ही जीवंत एवं सुंदर है । जैसे -

बदली ने जब साड़ी निचोड़ पानी बिखराया धरती पर
भीगी धरती कुछ झुंझलाइ, पर नन्हीं दुर्वा मुसकाई ।
बिजली की पायल बजी, अचानक मेघों ने की वाह वाह
खेतों के धुले धुले मुखड़े, पर बीरबहूटी शरमाई ।[1]

प्रकृति का बड़ा ही रमणीय यथातथ्य चित्रण सुचारू रूप से गुजरात के उभरते कवि डॉ० रमणलाल पाठकजी ने किया है । रात को जो वर्षा हुई उसका परिणाम प्रातः के कार्यकलापों में दृष्टव्य है । जैसे -

सुबह हुई
गाँव ने आसपास के ताल तलैयों को
सुभरे
लहराते देखा
बच्चों को पागल होकर
छपछपाते देखा
और भैंसों के झुण्ड को
पानी में पांगुरते देखा ।[2]

पाठकजी ने एक नवीन कल्पना को सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया है । उन्होंने एन्टीना पर नाचते हुए मोर का सुंदर चित्रण किया है । जैसे -

---

1. भाव निर्झर - "सावन में" - कु० मधुमालती चौकसी - पृ० 45
2. मेरा गाँव : तीन परिदृश्य : दो - जनरल ऑफ थी म०स०यु० ऑफ बरोडा, 1992 - पृ० 187

मेरे गाँव में
एक ऐसा है ढिलेर मोर
जो लम्बे एन्टेना पर बैठकर
सन्ध्या से रात भर, भोर तक
कलगी पर नाचता रहता है ।[1] - डॉ० पाठक

तो कहीं हमें प्रकृति की कोमलता भी नजर आती है जैसे -

महारथी सूर्य, रसनिधि चन्द्र
तारे झूमते हैं बादलों में घूमते
मेरे लिये
तो भी, गगन क्यों आज वीरान है ?[2]- प्रो० हसित बुच

यहाँ सूर्य की तेजस्विता, चन्द्र की शीतलता और व्योम, तारे बादलों के माध्यम से कवि ने प्रकृति का सटिक चित्रण किया है ।

कभी आशावादी कवि प्रकृति को कुछ अलग ढंग से व्यक्त करता है जैसे -

वासंती पाँखों पर
गंध लिये आती है ।
आँगन की धूप-छाँव
गीत नया गाती है ।[3] - दयानन्द जैन

तो कहीं प्रकृति में सजीवारोपण करके विरह एवं मिलन अर्थात् श्रृंगार रस का उत्कृष्ठ उदाहरण हमें यहाँ मिलता है । जैसे -

वृन्दावन तिलक रहा विरहा के गीतों पर
पतझर हो जाने रे क्या पाया भटकाकर ।[4]
- डॉ० दयानन्द जैन

---

1. "तीन" - डॉ० रमणलाल पाठक - मेरा गाँव तीन परिदृश्य : दो - पृ० 188
2. "अप्रकाशित" - प्रो० हसित बुच
3. "रसवन्ती प्यास" - श्री दयानन्द जैन - पृ० 10
4. "रोशनी की तलाश"- डॉ० दयानन्द जैन

प्रेमानुभूति मानव जीवन की एक नैसर्गिक प्रवृत्ति है । गुजरात के आधुनिक कवियों ने उस प्रवृत्ति को अपने सप्तरंगी भावात्मक चित्रों को प्रकृति के संयोजन से उद्घाटित किया है । जैसे –

"आज सुरज ने
जुही के कानों में
न जाने क्या बात कही ।"[1]
– रमेशचंद्र शर्मा "चन्द्र"

प्रेम के दो पक्ष होते हैं । संयोग श्रृंगार एवं वियोग श्रृंगार । यहाँ वियोग श्रृंगार का बड़ा ही सुन्दर चित्रण हमें मिलता है –

अपनाय सुजान को दूरि बसै, दुखदानि सनेह को मारगु
यहि सोच में पागी रही विधिना यह कैसो अंगारो बन्धो जगु है ।
समुझावति हैं अपुने जिड़को, परि ये बजमारो महा ठगु है ।
सखि पूछति हौं घनआनंद सौं इन आवन का ठिठके पगु है ।[2]
– कु० मधुमालती

यहाँ रीतिकालीन काव्यभाषा, ब्रज की कमनीयता भी दृष्टव्य है ।
सूफिया प्रेम की पीर का अनुभवकरने वाले आधुनिक गुजरात के सूफी कवि बालाशंकरजी को देखिए –

कौन दशा हमरी मर की हमरे पियुतों भयो चीर वियोगा
कौन कीये अति पूरब पाप की पीयतों आज तुरयो है संजोगा ।
रैनि दिनु चित में बिरहानल कारत है कहा जानत लोगा
पिय वियोग टरे नहीं टारत जानी ये आपके कर्म के भोगा ।।[3]
– बालाशंकर कंथारिया

---

1. नयी धरती नया आकाश, संपादकीय डॉ० अम्बाशंकर नागर, डॉ० रामकुमार वर्मा, डॉ० रमेशचन्द्र शर्मा "चन्द्र"
2. सुजान की पाती (प्रकाशाधीन) – कु० मधुमालती चौकसी
3. 1942 के बाद के काव्य – उमाशंकर जोशी, बालाशंकर कंथारिया

प्रेम एक ओर हमारे जीवन में अनेकों पारिवारिक - सामाजिक सम्बन्धों को विस्तार देता है तो दूसरी ओर वह हमारी कर्तव्य बुद्धि को परिष्कार, मर्यादा और कल्याण की वृत्ति देता है । प्रेम भोग्य वस्तु नहीं अपितु आत्मभोग्य है और मानव अपनी चेतना के माध्यम से ही इसे प्राप्त कर सकता है । प्रेम सर्जनात्मक प्रक्रिया को विकास और सौन्दर्य देता है ।

आधुनिक कवियों में अविनाश श्रीवास्तवजी ने मानो प्रकृति को बड़ी नजदीकी से देखा और सुना है -

फूला फिर से पलाश
पीला तब अमलतास
सन्दर्भों सा सार्थक
सेमल गा रहा फाग
हंसता है गुल मोहर
दूल्हा बनता कनेर
पीपल संन्यासी बन
हंसकर चढ़ता मुंडेर ।[1]

श्री अविनाशजी ने प्रकृति के तत्वों के माध्यम से मानो प्रकृति को सजाया संवारा है ।

पुरवइया, सन सनन सनन तन
सावन करता है अभिनन्दन
झरता नीर निरन्तर छम छम
रस से पगे हुए हैं कण कण ।[2]

तो कहीं लघु काव्य या एक श्वासी काव्य में भी प्रकृति को नये तुले शब्दों में सुंदरता का जामा पहनाया गया है । जैसे -

बर्फ से ढके
शिखरों का सौन्दर्य
शाश्वत गीत ।[3] - डॉ० भगवतशरण अग्रवाल

---

1. समकालीन हिन्दी कविता - डॉ० अम्बाशंकर नागर,
   श्री अविनाश श्रीवास्तव "आमुख" - पृ० 17
2. छूटे तट बन्धों पर पुनः "झरता नीर" - श्री अविनाश श्रीवास्तव - पृ० 32
3. शाश्वत क्षितिज - डॉ० भगवतशरण अग्रवाल - पृ० 11

प्रकृति को ही दृष्टान्वित करता हुआ और एक हाइकु -

झुकता नभ
चूमने पहाड़ी का
शांत सौन्दर्य ।[1] - डॉ० अग्रवाल

उपर्युक्त पंक्तियों में सौन्दर्य पिपासु नभ का पहाड़ी को चूमने के लिए झुकने की ललक एवं तज्जनित व्यापार की रमणीय अभिव्यंजना की गई है । तो कहीं प्रकृति का सीधा चित्रण भी हुआ है । जैसे -

वर्षा की झीनी झीनी फुहारों से
भरा भरा आकाश
भीनी माटी की खुशबू
धीमी धीमी बयार है ।[2] - दिव्या राकेश

उन्होंने यहाँ सांझ एवं सूरज जैसे प्रकृति के तत्वों को केन्द्र में रखकर अविरत चलते मानव प्रवाह की बात कही है । जैसे -

ढलती सांझ को
डूबते सूरज की
रक्तिम आभा को
रोज निहारते -
अविरत चलता
मानव प्रवाह ।[3] - दिव्या राकेश

प्रकृति मानव की चिर सहचरी रही है, किन्तु महानगरीय संस्कृति आज मनुष्य को प्रकृति से दूर ले जा रही है । यही कारण है कि पश्चिमांचल के कवियों ने प्रकृति के बड़े ही आकर्षक चित्र शब्दों की तूलिका से अंकित किये हैं -

---

1. शाश्वत क्षितिज - डॉ० भगवतशरण अग्रवाल - पृ० 64
2. "झूला" - श्रीमती दिव्या राकेश - पृ० 37
3. "स्पन्दन"- श्रीमती दिव्या राकेश

घिर आए बदरा
घुल रहा कजरा
बहका बजरा
पवन मचाये शोर ।[1] - सुधा श्रीवास्तव

प्रकृति का मनोरम चित्रण यहाँ द्रष्टव्य है जैसे -

झिंगुरों ने पायल पहन लिए
धरती ने रजत वस्त्र ओढ़ा ।
झरनों की मधुमय कल कल से
पुलकित होकर पवन बहा ।[2] - कृष्णा गोस्वामी

नारी सौन्दर्य

आधुनिक कवियों ने नारी सौन्दर्य को बहुत महत्व दिया है । उन्होंने नारी सौन्दर्य का बड़ा ही उन्नत चित्रण किया है । उन्होंने प्रकृति के विभिन्न रूपों को माध्यम बनाकर नारी की महानता को व्यक्त किया है । तत्पश्चात के कवियों ने सौन्दर्य को नये दृष्टिकोण से देखा । वह वर्तमान जन-जीवन में सौन्दर्य खोजता है न कि वह कल्पना लोक के निष्क्रिय सौन्दर्य को ढूंढता है । नयी कविता तक आते-आते सौन्दर्य बोध ने बौद्धिकता का सहारा ले लिया । सामाजिक यथार्थ को सौन्दर्य बोध की बुनियाद माना गया ।

पूर्ववर्ती काव्यधारा में नारी - चित्रण आलंबन एवं उद्दीपन के माध्यम से काल्पनिकता को केन्द्र में रखकर होता था । छायावाद तक आते आते नारी मुक्ति और स्वाधनता के घोषणा की ध्वनि सुनाई पड़ी । साथ ही नारी को श्रद्धा की प्रतिमूर्ति के रूप में प्रतिष्ठित किया गया अर्थात् "नारी नयी कविता का सौन्दर्य बोध पुरातन मूल्यों और सौन्दर्य की अस्वीकृति तथा व्यंग्य से युक्त होकर भी जुगुप्सा नहीं पैदा करता । वह जीवन और प्रकृति के अनेक भोगे हुए क्षणों और कणों को बड़ी ताजगी से उभारता है ।"[3] आधुनिक काल में नारी के वैविध्य भरे पहलू नजर आते हैं ।

---

1. नयी धरती नया आकाश : संपादकीय श्री अम्बाशंकर नागर, सुधा श्रीवास्तव, राम कुमार गुप्त
2. कृष्णा गोस्वामी - नयी धरती नया आकाश, डॉ० नागर, डॉ० गुप्त - पृ० 84
3. नयी कविता के प्रतिमान : लक्ष्मीकांत वर्मा - पृ० 204

एक ओर नारी मुक्ति एवं स्वातंत्र्य की बात अपने अलग अंदाज में है तो दूसरी ओर नारी शोषण, नारी दहन, नारी अत्याचार आदि अपने चरम उत्कर्ष पर है । कहीं अपने स्वमान के लिए समाज से जूझती नारी है, तो कहीं अपना दामन बचाती हुई विद्रोही नारी ही आज की नारी है, तो कहीं समाज द्वारा ड्राइंग रूम की सजावट मात्र बनी हुई नारी है । साथ ही कहीं वर्षों से अबला मानी जाती नारी को सबला बनाने का एक सुंदर एवं सफल प्रयास भी हुआ है । आज के माहौल का तकाजा अर्थात् अस्मिता एवं अस्तित्व की चाह और दर्द आधुनिक नारी का एक प्रश्न है । आधुनिक कवियों ने नारी शिक्षा को भी प्राथान्य दिया है । जैसे कि -

बेटी धन नहीं व्यक्ति है
पुत्री अबला नहीं है एक शक्ति
कन्या को संस्कारों में
उत्तम शिक्षा का वरदान दो
बहुत हुआ नारी शोषण
उसे जीवन का
नया आयाम दो ।[1] - मीरा रामनिवास

आधुनिक नारी की आज की स्थिति कुछ इस प्रकार है । जैसे -

औरत पहले तुलसी के पत्तों सी
श्रद्धा से संजोई गई, पूजी गई,
बाद में -
गुलाब सी महकी, महफिलों में
संवारी गई, सहलाई गई
और -
आज
"मनीप्लान्ट" बन गई है । - मंजु "महिमा"

---

1. बोनसाई संवेदनाओं के सूरजमुखी अंकुर - श्रीमती मीरा रामनिवास
2. मनीप्लांट - मंजु भटनागर "महिमा" - पृ० 18

यहाँ आधुनिकता पर करारा व्यंग्य किया गया है । आज भी नारी की यही स्थिति है कि -

जलाई जा रही है बहू बेटियाँ
निर्दोषों की आतंक फैलाकर ली जा रही है जान
भगाई जाती है बेटियाँ बिन ब्याह बिन सगाई
दहेज के खातिर कभी टूट जाती है ब्याह सगाई ।[1]

- मीरा रामनिवास

अथवा

अब न तस्वीर थी वो
न ही कठपुतली
समय के थपेड़ों से
जूझती
बीच में लटकती
- - - अटकती
सहमी भयभीत
सिर्फ
एक लाश थी वो ।[2] - नलिनी पुरोहित

किन्तु आधुनिक परिवेश में पली बड़ी आज की नारी अपने अतीत से तलाक लेकर अपने अलग अस्तित्व एवं अस्मिता के प्रति बड़ी ही सजग और चिंतित है जैसे

भारतीय नारी - अनिश्चयों की दहलीज पर खड़ी
विभ्रमित सी, अपनी अस्मिता को कर रही है प्रयास ! आज ।[3]

- मंजु

---

1. श्रीमती मीरा रामनिवास
2. नलिनी पुरोहित - अनुभूति
3. बोनसाई संवेदनाओं के सूरजमुखी : मंजु भटनागर "महिमा" - पृ0 16

ठीक वैसे ही आधुनिक नारी का हमारी समाज व्यवस्था के प्रति विद्रोह दृष्टव्य है । जैसे -

बेटी पत्नी माँ और दादी
नये नये उपनामों में ढलती रही
हाय मेरी अलग अस्मिता कभी न रही ।

- मीरा रामनिवास

अर्थात् आधुनिक काल में नारी को मात्र भोग्य वस्तु न मानकर उसे उसके सही रूप में पहचानने की कोशिश हुई है । न ही उसे मात्र सौन्दर्य की मूर्ति माना गया है । उसे बौद्धिक स्तर पर तराशा गया है । उसके एक अलग वजूद को स्वीकृति भी मिली है । उसे कल्पना मात्र न मानकर वास्तविकता से जांचा परखा गया है । आज की नारी वास्तविकता के धरातल पर खड़ी जीवन की विषमता पूर्ण मुसीबतों को अकेले झेलने की ताकत लिए हुए है । हमें आधुनिक काल में नारी का विद्रोहीणी स्वरूप भी दृष्टिगत होता है । निम्नस्थ पंक्तियों में द्रौपदी के चिरहरण के का प्रयोग कर साम्प्रत काल में भी नारियों पर हो रहे अत्याचारों के प्रति मार्मिक संकेत किया गया है । विषम परिस्थिति में नारी जहाँ तक हो सके अपने आप प्रतिकार तो करती ही है किन्तु विनिशा हो कर उसे अंततः ईश्वर की सहायता के लिए पुकारना पड़ता है । यहाँ स्वयं श्रीकृष्ण बताते हैं -

आया था -
मुझे पुकारते हुए
आँधियों में घिरे एकाकी पाखी सा
पंख फड़फड़ाता यह
विवश प्रिया का
आर्तस्वर आया था ।[1]

यहाँ चिरहरण के समय को द्रौपदी के आर्तस्वर को आँधियों में पंख फड़फड़ाते एकाकी पंछी के बिम्ब द्वारा व्यंजित किया गया है ।

---

1. उत्तर महाभारत : डॉ0 काबरा

आधुनिक कवियों ने नारी को अनेक रूपों में हमारे सन्मुख रखा है । कहीं पर नारी का वही पुराना शोषित, दमित, पीड़ित रूप आज भी मौजूद है किन्तु उसकी अभिव्यक्ति का ढंग बदल गया है । आज नारी ड्राइंग रूम में सजे व हुए "मनीप्लान्ट" सी हो गई है तो कहीं वह अपनी अस्मिता के विषय में चिंतित है किन्तु कुछ कवियों ने नारी को अलग रूप में चित्रित किया है । वह शक्ति का प्रतीक है । नारी शिक्षा को प्राधान्य देना आवश्यक है । कवि की दृष्टि से नारी को शिक्षा प्रदान कर उसे जीने का नया आयाम देना होगा । समाज में उसे अपनी अलग पहचान बनानी होगी । आधुनिक नारी पुरानी जड़ परम्पराओं को नहीं मानती है । वह एक विद्रोही के रूप में भी आज उभर रही है । वह अन्याय को सहने के पक्ष में नहीं है और वह त्याग की मूर्ति बनकर जीना नहीं चाहती । ना ही वह देवी या पूजनीया भर बनना चाहती है । आज की नारी तो सिर्फ सही रूप में जीना चाहती है ।

आधुनिकता के साये में पनपे आज के दूषण जैसे क्वारी माताएं, परस्त्री गमन, जुआ और शराब आदि आज के युग में फैशन बन गया है । ये ही आधुनिकता के मापदंड बन कर रह गये हैं । आधुनिक कवियों ने समाज के इन सभी दूषणों को व्यंग्यात्मक रूप से हमारे सन्मुख रखने का एक बड़ा ही सफल प्रयास किया है । उन्होंने बिना किसी हिचकिचाहट के प्रामाणिक रूप से इन सब बातों को एवं आज की भ्रष्ट आधुनिकता को सबके सन्मुख रखा है । आज भ्रष्टाचारी जिस गति से बढ़ रही है उसे देखकर लगता है मनुष्यों ने अपना ईमान बेच दिया है । यांत्रिक व्यस्तता में उलझे हुए आज के मनुष्य को स्वयं के अंतर्मन से निकली हुई आवाज भी नहीं सुनाई देती । वह मशीन का एक हिस्सा मात्र बन कर रह गया है । इन सब बातों को आज के कवि ने न्याय दिया है जो प्रशंसनीय है ।

साथ ही युगीन विभीषिकाएँ उभरी हैं । उसमें एक महानगरों का संत्रास भी है । विज्ञान के आविष्कारों और यातायात के साधनों ने एक ओर तो गाँवों को नगरों से जोड़ा है दूसरी ओर औद्योगीकरण की आपाधापी ने इन गाँवों को तोड़ा भी है । आज महानगरीय विराटता आम आदमी को अपने क्रोड़ में कस कर घूर घूर कर रही है । उसमें भय, असुरक्षा, अकेलापन, अजनबीपन की त्रासद अनुभूति उत्पन्न कर रही है ।

आधुनिक काव्य में हमें मोहभंग का आभास भी नजर आता है । परिणामतः हमारी संजोयी हुई आस्थाएँ नष्टप्रायः होने की संभावना है । साथ ही महंगाई, बेरोजगारी, पदलोलुप भ्रष्ट नेता एवं चलती फिरती लाशों के समान मानव पुतले तथा टुटी झोपड़ियों में घुएँ एवं घुटन के बीच जिये जानेवाले जीवन के दृश्यों ने युवा पीढ़ी को निराशावादी बना दिया है । यही कारण है कि आधुनिक काव्य में हमें कहीं कहीं निराशावाद की झलक मिलती है किन्तु मनुष्य स्वभाव आशावादी है । स्वतंत्रता प्राप्ति पश्चात् आत्मविश्वास ने अपनी एक जगह बनाई । अपने अस्तित्व के प्रति जागरूकता ने जन्म लिया । वे आस्थावादी हुए । विषम से विषम परिस्थितियों में भी वे आशावादी बने रहे किन्तु कामनाओं की लगातार होती हुई निष्फलता से मनुष्य में कुण्ठा ने जन्म लिया और धीरे-धीरे कुण्ठाग्रस्त व्यक्तित्व के कारण निराशा, अनास्था, आदि का जन्म हुआ किन्तु आज के मनुष्य को भविष्य के प्रति कुछ आशाएँ हैं, अभिलाषा है अर्थात् जहाँ अनास्था, निराशा एवं कुंठा हमें दृष्टिगोचर होती है वहीं आस्था, आशा एवं विश्वास भी मिलता है ।

हमें आधुनिक काव्य में बौद्धिकता की प्रधानता मिलती है । इससे आधुनिक काव्य में आस्तिकता का लोप और नास्तिकता का वर्चस्व सर्वत्र नजर आता है । बुद्धि तत्व के प्रमुख होते ही तर्क को प्राधान्य मिला है परिणामतः मूल्यों आदि का लोप हुआ । यही कारण है कि हमें आधुनिक काव्य में भाव तत्व की अपेक्षा बुद्धि तत्व की प्रधानता दृष्टिगत होती है । इन्हीं अनास्था, अनैतिक एवं हताशा भरे माहौल में से बचने के लिए आपसी एकता, उदारता का व्यवहार आदि के भरसक आवश्यकता की ओर भी कुछ देशप्रेमी राष्ट्रवादी कवियों ने संकेत अवश्य किए हैं । गांधी जीवन दर्शन से प्रभावित कवि मोहनभाई भावसार का कहना है -

> एक पिता है, एक देश है, हिलमिल कर के रहना है
> भारत को तो महान बनाओ, यही सभी से कहता हूँ ।[1]

उज्ज्वल भविष्य एवं प्रखर आशावाद की गहरी उदात्त भावनाओं को व्यक्त करते हुए "चरैवेति" के कवि मानवधर्म का आदर्श प्रस्तुत करते हुए बताते हैं -

---

1. समय की पुकार : श्री मोहनभाई भावसार - पृ० 20

भग जाय विषमता सारी, बंधुत्वभाव विकसित हो
नित नई सुमति संपत्ति से जन-जन पुलकित हर्षित हो
मानव हो धर्म हमारा, मानव हो कर्म हमारा
भारत का कण-कण हमको हरदम ही हो प्यारा ।[1]

आधुनिक काल में सामूहिक परिवेश की कटुता, नैतिक मूल्यों का विगलन, पुराने मूल्यों का विस्थापन, आस्था का लोप, राष्ट्रीय असुरक्षा राजनैतिक अधःपतन शासकों के भ्रष्टाचार, आदि का बोलबाला बढ़ता जा रहा है । राष्ट्रीयता के हामी एवं गुजरात के वयोवृद्ध साहित्यिक सेनानी डॉ० रामअवधेश त्रिपाठी ने वर्तमान राजनीतिक असुरक्षा एवं अधःपतन की ओर यों संकेत किया है -

पी राजनीति का विष-प्याला, बनता सफेद भी है काला,
रोती कश्मीरी गिरिमाला, लगता हड़तालों का ताला
भारत की विस्फोटक सीमा, है बनी कालिका सी भीमा ।।

- रामअवधेश त्रिपाठी

राजनैतिक अधःपतन के साथ-साथ जीवन मूल्यों का भी लोप हो रहा है और राष्ट्रीय चरित्र का भी ह्रास हो रहा है । आज नेताओं में जनता की आस्था नहीं रही जैसे -

लग रहा है महल है यह राजनेता का किसी
द्वार पीछे का खुला है सामने का बन्द है ।

- रामसेवक वर्मा

आज की निकम्मी सरकार और आज की जनता के बीच का सम्बन्ध कवि यहाँ उजागर करता है कि -

---

1. चरैवेति - श्री रामअवधेश त्रिपाठी - पृ० 80

तुम तोप, तेग बन्दूक सदृश मैं शुष्क बाँस की लाठी ।
तुम किसी मील की चिमनी हो, मैं भड़भूजे की भट्ठी ।।[1]

– रामअवधेश त्रिपाठी

राह कांटों से भरी है, और खूं में तर कदम
उफ् न कर, ऊँगली उठा मत, अपनी ही सरकार है ।[2]

– भगवानदास जैन

प्रथम उदाहरण में अपनी प्रजा की असह्य पीड़ा को "भाड़भूजे की भट्ठी" के द्वारा तथा द्वितीय में सरकारी गैर जिम्मेदाराना ~~[illegible]~~ वृत्ति का अपनी ही सरकार के द्वारा गहरी व्यंजना की गई है ।

आधुनिक भ्रष्ट परिवेश एवं कटु स्थिति को कविवर नागरजी द्वारा बड़ी ही सशक्त अभिव्यक्ति मिली है । प्रस्तुत उदाहरण में नागरजी ने "श्वानों की लड़ाई" एवं "सूकर से पेट भरने" के प्रयोग द्वारा परिस्थिति की अधोगामिता के प्रति सही संकेत किया है । जैसे –

अपनी अपनी बातों पर सब अड़ रहे,
निज स्वार्थों के लिए श्वान से लड़ रहे
सबको अपनी पड़ी, पराई क्या पड़ी,
सूकर सा निज पेट आप हैं भर रहे ।[3] – डॉ० नागर

व्यंग्य

आधुनिकता में उलझे हुए आज के अनैतिक समाज के प्रति एवं बढ़ती आबादी के नियंत्रण के लिए कुटुम्ब नियोजन की सरकारी नियोग योजना के प्रति करारा

---

1. चरैवेति – श्री रामअवधेश त्रिपाठी – पृ० 50
2. समकालीन हिन्दी कविता "गुजरात" – श्री भगवानदास जैन – पृ० 16
   आज का अखबार – डॉ० नागर
3. आज का अखबार – डॉ० अम्बाशंकर नागर

व्यंग्य एवं जबरदस्त चोट करते हुए जागरूक कवि भगवत्स्वरूपजी कहते हैं -

हम खुश हैं -
पिछले साल सिर्फ ग्यारह लाख,
कुंवारी माताओं ने गर्भ गिरवाये थे,
और इस साल -
पचास लाख से अधिक ने
अपने इतने बच्चे पैदा होने से बचा लिये
और कुमारियों की इज्जत भी ।
{डॉक्टरों की आमदनी भी बढ़ा ली}

- डॉ० भगवत्शरण अग्रवाल

यहाँ व्यंग्य का उत्कृष्ठ उदाहरण हमें मिलता है । यह व्यंग्य आधुनिक कवियों की विशेषता है । आज के परिवेश को वह बड़े ही सुन्दर ढंग से उजागर करने में सफल रहे हैं । व्यंग्य का एक उत्कृष्ठ उदाहरण हमें यहाँ मिलता है । जैसे -

घूरे के ढेर पर पलती है जिन्दगी
"मेरे भारत महान" तुमको नमन बन्दगी ।
मुर्गे के बांग संग दूधमुंहे उठते हैं
दोनों ही भूख के हाथों में लुटते हैं
दोनों ही संग संग खोजते हैं जिन्दगी ।[2]

- कैलाशनाथ तिवारी

कविवर नागरजी ने वर्तमान युवा पीढ़ी की जर्जरता पर कटाक्ष किया है । जैसे -

---

1. डॉ० भगवत्शरण अग्रवाल
2. अंजुरी भर प्यास : "मेरा भारत महान" - श्री कैलाशनाथ तिवारी - पृ० 60

भारत के ये नौजवान
ये भावी पीढ़ी के प्रतीक
ये स्वतंत्र राष्ट्र के कर्णधार
तन से जर्जर, मन से शंकित
कैसे दुर्बल ! अति आतंकित !
सोते हैं ये चिर निद्रा में
ताने तम का भीषण वितान ।[1] — डॉ० नागर

आज के वैज्ञानिक युग में मनुष्य का यंत्रमय जीवन मनुष्य के परस्पर खोखले सम्बन्ध एवं भ्रष्ट आचार-विचार और उसका असर हमारे सन्मुख रखने की कोशिश कर रहा है । आज के युग में मनुष्य आगे बढ़ने की दौड़ में अधिक से अधिक गहरी खाई में उतरता जा रहा है । मनुष्य मशीन पर ही निर्भर है उसका जीवन एक मशीन मात्र बन कर रह गया है । इन सब बातों पर आधुनिक कवियों ने तीखा व्यंग्य किया है -

हम कितने ठोठ हो गये हैं ?
युद्ध की विभीषिकाओं को
भोजन के साथ खा लेते हैं
और
रात को कहानियों के साथ
पढ़कर सो जाते हैं ।[2] — दिव्या रावल

या

करूं ! न करूँ !
प्रेम ! रुको, पूछ लूँ
कम्प्युटर से ।[3] — डॉ० भगवतशरण अग्रवाल

---

1. धुँध चाँदनी और कैक्टस : "ये शिक्षा के जर्जर स्तूप" : डॉ० नागर - पृ० 66
2. मौन का आंगन "ठोठ" - दिव्या रावल
3. टुकड़े टुकड़े आकाश : डॉ० भगवतशरण अग्रवाल - पृ० 29

कम्प्युटर के द्वारा खिलाये पिलाये जाने की साम्प्रत अल्ट्रामॉडर्न जिंदगानी की बढ़ती ललक के साथ कम्प्युटर से ही पूछ कर प्यार करने की मनोदशा के प्रति संकेत कर अग्रवालजी ने साम्प्रष्ट समाज जीवन की तथोक्त आधुनिकता एवं संवेदनशीलता को स्पष्ट किया है । अपने दिल-ओ दिमाग या माता-पिता से नहीं किन्तु कम्प्युटर से पूछ कर प्यार कराने का करने की मनःस्थिति की यहाँ सटीक व्यंजना है । कहीं कवि प्रारब्ध-वाद के धरातल पर खड़ा है जैसे -

नियति के आगे मनुष्य
कितने निरुपाय रे ।[1] - डॉ० नागर

तो कहीं कवि आशावादी भी है जैसे -

हर तुहद विश्वास का सूरज उगे सम्भव नहीं
हर अभाव से श्राप का सम्बल बने, मुमकिन नहीं ।[2]
- अविनाश

निराशावाद भी आशावाद के साथ ही चलता है । जैसे -

अँधेरे कुएँ में डूबकर
उस बुझी रोशनी को
क्यों ढूँढे ?[3] - दिव्या राजन

छाया-वादोत्तर कविता के पश्चात् हमारे कवियों में एक विशेष प्रकार की जागृति एवं प्रवृत्ति पाई जाती है । अतः मोहभंग समकालीन कविता का प्रधान स्वर रहा है । स्वातंत्र्य प्राप्ति पश्चात् मिली उदासीनता ने बुद्धिजीवी को भी हताशा के गहरे कुएँ में धकेल दिया ।

---

1. चाँद चाँदनी और कैक्टस : "अमावस और पतझर" - डॉ० अंबाशंकर नागर - पृ० 33
2. पिछले बहार के सूरजमुखी : श्री अविनाश
3. "गुनाह" मौन का आंगन : श्रीमती दिव्या राजन

क्या इसी के लिए, हमने अपना भाग्य लेखक
तुम्हारे हाथों में दिया था कि तुम उसमें हमारी सांसों के
विसर्जन का निर्दय गीत लिखोगे ।.....
परन्तु यह मत भूलो, सुबह होने पर सूरज
सब जगह पहुँच जाता है ।[1] - रमाकांत शर्मा

अर्थात् निराशा के स्वर के साथ आशा की भी एक किरण हमें मिलती है । मोहभंग की पूर्ति करती हुई कुछ पंक्तियाँ द्रष्टव्य है । जैसे कि -

क्योंकि बुद्धिजीवी तो, संत्रास पहनता है
अनास्था ओढ़ता है, अस्तित्वहीनता जीता है
आत्मदया खाता है, उदासीनता में रहता है ।[2]
- डॉ० भगवतशरण अग्रवाल

इन सब से हम कह सकते हैं कि आज की कविता तनावपूर्ण स्थिति में ही पनप रही है । व्यक्ति खुद वैविध्यपूर्ण विषम परिस्थितियों से ग्रस्त है । वह इन विषम परिस्थितियों में जीवन जीने के लिए विवश है । परिणामतः वह कहीं हताशा, आक्रोश, निरीहता, कुंठा, बोझलपन, एकाकीपन आदि में जकड़ा हुआ है । यही कारण है कि आधुनिक कविता में हमें यह सब दिखाई देता है । साथ ही आस्था, आशावाद, श्रद्धा आदि का भी लोप नहीं हुआ है । जब तक मनुष्य है वह जीने का प्रयास तो अवश्य ही करता रहेगा । अतः मनुष्य नवीन मानव मूल्यों की स्थापना करना चाहता है ।

वर्तमान समय में अपनत्व का अभाव, सम्बन्धों में दरारें, समय की कमी, आधुनिक विघटनकारी परिवेश के परिणाम स्वरूप प्रकृति के प्रति उदासीनता, एकाकीपन से आज का मनुष्य ग्रस्त है । जैसे -

"बातें करतीं हरियाले लान पै पड़ी कुर्सियाँ ।"[3] - डॉ० अग्रवाल

---

1. समकालीन हिन्दी कविता : गुजरात : डॉ० नागर, डॉ० रामकुमार वर्मा - पृ०71
2. खामोश हूँ मैं : डॉ० भगवतशरण अग्रवाल : पृ० 71
3. शाश्वत क्षितिज : डॉ० भगवतशरण अग्रवाल : पृ० 11

या

"एकान्त का धिक्कार, किसी नर-पक्षी का
दूरान्तर गुफा में, मर्मभेदक अट्टहास"[1] — अविनाश

वैज्ञानिक शोध एवं विकास के परिणाम स्वरूप विनाशक अणु युग का प्रारम्भ हुआ है तब से आधुनिक शस्त्रास्त्रों एवं अणु शस्त्रों का उत्पादन दिन-ब-दिन बढ़ता जा रहा है । युद्ध की प्राथमिकता बढ़ रही है । इसलिए उसके पीछे छिपे हुए हिंसाचार एवं अत्याचार की विभीषिकाओं की ओर मानव ध्यान नहीं दे रहा है । फिर भी साहित्यकारों की दृष्टि इन समस्याओं की व्यंजना की ओर विशेष रूप से गई है ।

<u>अध्यात्म :</u>

भक्ति, ज्ञान, आध्यात्मिक जागृति, आत्मसाक्षात्कार, ब्रह्मानन्द प्राप्ति की ललक, उसकी स्वानुभूति एवं तज्जनित उल्लासपूर्ण अभिव्यक्ति आदि की गुजरात के आधुनिक हिन्दी काव्य की एक लम्बी परम्परा रही है । अज्ञात विस्मायक मनःस्थितियों एवं अनुभूतियों से उत्प्रेरित एवं उजागर करनेवाले संत भक्त एवं अध्यात्मसाधक कवि समय-समय पर होते रहे हैं । हमारे युग में उनको दयानन्द सरस्वती, स्वामी रामकृष्ण परमहंस, विवेकानन्द, श्रीअरविंद आदि की उपस्थितियाँ मिला है और उसमें भी विशेषकर गुजरात के साहित्यकारों को काफी प्रभावित, आन्दोलित एवं भावनारत बनाया है । इन महात्माओं के साहित्य एवं जीवन ने आज के संत्रस्त मनुष्य के मन में आर्यभाव स्वस्थता, आस्था एवं उज्ज्वल भविष्य तथा दिव्यजीवन की प्राप्ति के प्रति गहरा उन्मेष अवश्य पैदा किया है । जिसे भावुक नहीं किन्तु प्रखर बुद्धिवादी लोगों पर भी इन अध्यात्ममार्गी महामानवों का उदात्त प्रभाव हुआ है । अतः परंपरित भक्ति के साथ युगानुरूप अध्यात्मका निरूपण करनेवाला काव्य भी पर्याप्त परिमाण में हमें उपलब्ध होता है ।

---

1. श्री अविनाश श्रीवास्तव

आधुनिक गुजरात के भक्त एवं सन्त कवियों की एक समृद्ध एवं वैविध्यपूर्ण परम्परा जो मिलती है उसमें सूफी कवि काजी अनवर, संत केवल पंथ के कवि छोटम, सूरत की इन्दुमति देसाई, सौराष्ट्र की निर्मलादेवी सरस्वती एवं दयानन्द उर्फ मुडिया-स्वामी, बड़ौदा के नृसिंहाचार्य एवं उपेन्द्राचार्य, सौराष्ट्र के अहीर रत्नो भगत, सिनाल के सागर महाराज एवं माताजी ओंकारेश्वरी तारेश्वर के रंगअवधूत आदि उल्लेखनीय है ।

इनमें उपर्युक्त संतमना, शालीन एवं उत्कट भक्त कवियों की वाणी में भक्ति एवं अध्यात्ममार्ग के परंपरित मार्गों का अनुसरण प्राप्त होता है । रामनाम की महिमा, जपसाधना सत्संग सद्गुरु सेवक आदि का माहात्म्य निरूपण मिलता है । साथ ही संत, नाम, ज्ञान आदि के महत्त्व को प्रतिपादित किया गया है तथा माया एवं भ्रांति आदि के उन्मूलन का आग्रह किया गया है । उसमें बाह्याचारों का खंडन तथा स्वानुभव का प्रतिपादन किया गया है । रत्नो भगत ने देह की नश्वरता, घट में अन्तर्यामी के निवास तथा स्वस्वरूप एवं ज्ञान के माहात्म्य का वर्णन किया है । सागर महाराज की रचनाओं में एक ओर जहाँ कबीर और अखा के जैसे ज्ञान की गरिमा है वहाँ दूसरी ओर जायसी और कलापी के जैसी सूफीयाना प्रेम की पीरभी विद्यमान है । ओंकारेश्वरीजी में हमें एक विशिष्ट प्रकार की परमात्मलीनता, मस्ती एवं अंतर की निश्छल एवं उद्दाम गुरु भक्ति के दर्शन होते हैं । इनके स्तवन भी उच्च कोटि के हैं । भगवान दत्तात्रय को निमित्त बनाकर कही हुई श्री रंग-अवधूत की वाणी में ज्ञान एवं भक्ति का अभेद व्यक्त हुआ है । इनकी वाणी में कहीं तो प्रेम-लक्षणा भक्ति का गोपीभाव है तो कहीं यौगिक साधना का गूढ़ ज्ञान, कहीं अद्वैता-नुभूतिजनित आनंद है तो कहीं सूफियों की सी प्रेम की पीर भी विद्यमान है ।

उपर्युक्त विवेचन की संपुष्टि हेतु हम यहाँ कुछ उदाहरण प्रस्तुत करते हैं जैसे –

जप मन राम रंग लाई, आ अवसर तेरो जात भाई ।
संत समागम समरण करले, धरले ध्यान सदा मन माई ।।[1]

या

1. गुजरात के संतों की हिन्दी वाणी : संपा० डॉ० नागर, डॉ० पाठक -मुडिया स्वामी पृ० 43।

सतसंगत में अखंड चल्यो रे, जग में मूढ कहायो ।
गुरू के चरन में प्रीति लगाके, शब्द हृदय ठहरायो ।
मन कछु नहीं पलटायो, ब्रह्मरटन ऐसे पायो ।[1] - नृसिंहाचार्य

अथवा

गुरू बिन कोउ प्रज्ञान न पावे गुरूजी ज्ञान निःसरणी ।
बिना भक्ति गुरूकृपा मिले ना, भक्ति ज्ञान निर्झरनी
झूँन रामजी भक्ति सीताजी इसी विधि एकीकरणी ।[2] - सागर

ईश्वरभक्ति का एक उदाहरण देखिए -

तेरा तुझमें ही मिल जाऊं, दिखे न दैत अपार ।
"रंग" रंगैया एक कहैया, और न मांगूं दयाल ।[3] - रंग अवधूत

वैविध्यसभर भक्ति के दर्शन हमें आधुनिक काल में मिलते हैं । जैसे -

आत्म निवेदी भक्त दृढ, ज्याके हरि पद हेत
पल पल आदिक कृष्णाकूं, अर्वे बिन नहि लेत ।। - स्वामी ब्रह्मानंदजी

तो कहीं प्रेमाभक्ति का सुंदर चित्रण आधुनिक कवयित्री शांति सेठ ने किया है जैसे -

जब श्याम ही तट पर, मुरली बजावें
मैं निरखि छवि, सुध-बुध बिसराऊँ
फूटे मन की कटकिया, मैं सागर में मिल जाऊँ ।[4]

---

1. गुजरात के संतो की हिन्दी वाणी - पृ० 442
2. गुजरात के संतो की हिन्दी वाणी - पृ० 458, 459
3. गुजरात के संतो की हिन्दी वाणी - पृ० 475
4. नीलाम्बर के नीचे : डॉ० शांति सेठ - पृ० 41 "मटकी"

"निलाम्बर के नीचे" की कवयित्री डॉ0 शान्ति सेठ को गुजरात की अध्यात्मवादी कविता की पुरस्कर्ता कहा जा सकता है क्योंकि निलाम्बर के नीचे में संकलित अधिकांश कविताएँ उनकी कवितभावना, गुरुप्रेम, अध्यात्म सदाचार, सत्संग आदि से भरी हुई है ।

जैसे - "राम रमैया, वही है नाविक, वही है नैया, वही है पार किनारा ।[1]

ईश्वर साक्षात्कार का बड़ा ही सुंदर चित्रण गुजरात की एक प्रतिनिधि कवयित्री मधुमालतीजी ने किया है । जैसे -

आये थे तुम
स्नेह का चिर संचित, चिर पावन, अमर सौरभ दान करने,
ओ मेरे चिर नूतन, द्युतिमान परम पुरुष ।
पलभर निज स्नेहिल रूप बिखराकर ही, छिप गये बिजली से
कजरारी काली बदलियों में ।[2]

आध्यात्मिक अनुभूति का बड़ा ही सुन्दर चित्र भगवतशरणजी ने किया है ।

जैसे - "पूर्ण में पूर्ण
जोड़ा, घटाया, गुणा
पूर्ण ही रहा ।"[3]

ईश्वर की सर्वोपरिता, सर्वव्यापकता एवं ईश्वर में आस्था भी आधुनिक कुछ कवियों में हमें मिलती है ।

जैसे - इस मन्दिर की मैया, जगदम्बा की देवी
f चिरन्तन तत्व की बिन कृपा जिनमें न हो उधार
महिमा अपार, मैया मन्दिर विशाल, महिमा अपार अपरम्पार ।[4]

काजी अनवर, माताजी ओंकारेश्वरी, निर्मलादेवी आदि की कविता तथोक्त आधुनिकतावादी कविता न होकर उनके अध्यात्म अनुभूतियों एवं सच्ची भक्ति

---

1. निलांबर के नीचे : डॉ0 शान्ति सेठ - पृ0 50
2. भाव निर्झर : कु0 मधुमालती चौकसी पृ0 2
3. शाश्वत क्षितिज : डॉ0 भगवतशरण अग्रवाल - पृ0 21
4. आस्था के गीत : अनास्था के बीच : डॉ0 भानुशंकर मेहता - पृ0 76

भक्ति भावनाओं की वाणी है । इसी आध्यात्मिकता एवं गहरी भक्तिभावनाओं का सिलसिला हमारे बीच वर्तमान मधुमालती चौकसी, शांति सेठ, भानुशंकर मेहता आदि की रचनाओं में उपलब्ध होता है ।

आधुनिक युग की अध्यात्म काव्यधारा के प्रतिनिधि एवं समर्थ कवि वीरेन्द्रकुमार जैन ने मधुमालतीजी की भक्ति भावना, श्रद्धा एवं तपस्या को रेखांकित करते हुए कहा वह ध्यातव्य है । "पूछता हूँ सन्त और किसे कहते हैं ? उसकी दो पंक्तियाँ याद आ रही है –

मेरी पीड़ा प्यार हो गई
पतझर आज बहार हो गई ।

यह कोरी काव्योक्ति नहीं, उसकी अनुभूति का स्फटिकेज्जवला साक्षात्कार है, ऐसी सहिष्णुता, ऐसी धृति और तितिक्षा, ऐसा भावदृत्समर्पण, सन्तों के सिवाय मुझे आज तक अन्यत्र देखने को न मिला । मुझे निश्चय प्रतीति है कि वह कोई पूर्वजन्म की योगिनी है जिसने उस जन्म में साधना अधूरी रहने के कारण – एक और जन्म लिया है । मदर टेरेसा की माँ मरियम और उसकी ज्योतिर्मयी बेटी एक साथ है ।...मीरा की तरह उसने अपने अन्तर्वासी छुपे प्रीतम के प्रति विरहमिलन के आत्मस्पर्शी गीत गाये हैं ।...."सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी सहितं नमामि"+ उन्हीं सदा वसन्त शिव और शिवानी की वह बहुत प्यारी बेटी है । इसी कारण मैं उसकी कविताओं को सन्त-काव्य कहना चाहता हूँ और सन्त काव्य अतुलनीय एवं अविवेचनीय होता है ।"[1]

राष्ट्रीय कविता

गुजरात की आधुनिक हिन्दी कविता के निर्माणमें जिन जिन कवियों को गिना जाता है उनमें बहुत ही कम कवि ऐसे हैं जिनका देश एवं विशेषकर गुजरात के राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम में सीधा सम्बन्ध रहा है । और उमाशंकर जोशी, सुन्दरम्

---

1. भाव निर्झर : मधुमालती की भूमिका – पृ0 2 – 3

उनकी राष्ट्रीयता एवं देशप्रेम पूर्ण ~~कविता~~ हिन्दी कविता नहीं मिलती।हाँ, गाँधीजी के स्वातंत्र्य संग्राम में सक्रीय योगदान के परिणाम स्वरूप देशभक्ति एवं अंग्रेजों को यहाँ से भारत छोड़कर चले जाने की कटुबात कहनेवाली "दूर हटो, दूर हटो ये दुनियावालों, हिन्दुस्तान हमारा है" झंडा ऊँचा रहे हमारा" आदि हिन्दी गीतों का सरस असर गुजरात के देशप्रेमियों पर था किन्तु ये गीत किसी गुजरात के साहित्यिक द्वारा नहीं लिखे गए। हाँ गाँधीजी के समकालीन कुछ कवियों ने देश की स्वतन्त्रता के लिए किए गए गाँधीजी के राष्ट्रव्यापी आह्वान से प्रेरित होकर गाँधीजी को नायक बनाकर गाँधी बावनी जैसी कुछेक हिन्दी-व्रज में कृतियाँ अवश्य रची है किन्तु गुजरात के किसी ऐसे कवि की देशभक्ति पूर्ण हिन्दी रचना नहीं मिलती जिसने अभियान में प्रत्यक्ष योग दिया हो। दुलेराय काराणी, दुलाभाया काग आदि कुछ कवि ऐसे हैं जिनके काव्य में गांधीवन्दना, देश प्रेम, स्वतंत्रता प्राप्ति की भावना रूप में अवश्य मिलती है। देश की एकता के लिए एक मात्र हिन्दी के स्वीकार एवं प्रचार-प्रसार के लिए गांधीजी के आह्वान को जेठालाल जोशी, देवदास गांधी, मोहनलाल भट्ट, काका साहेब कालेलकर द्वारा स्वीकार कर हिन्दी के प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान अवश्य दिया किन्तु इन देश प्रेमी-हिन्दी प्रेमी धर्मवीरों की हिन्दी कविता के नमूने उपलब्ध नहीं होते।भगवतशरण अग्रवाल, अम्बाशंकर नागर, रमाकांत शर्मा आदि गुजरात की गाँधी सुगंध से अवश्य वर्षों से जुड़े हैं। वर्तमान युग के इन बुजुर्ग हिन्दी सेवियों ने गुजरात के स्वतंत्रता संग्राम में सीधा हिस्सा लेकर ऐसी हिन्दी कविताओं का निर्माण नहीं किया जिनमें से स्वतंत्रतापूर्व गुजरात की देश प्रेम स्वतंत्रता की भावना का सही सही एवं प्रामाणिक अंकन हो सके। "दीनबंधु" रामअवधेश आदि कुछ कवि ऐसे अवश्य है जिन्होंने प्रत्यक्ष रूप से हिस्सा लिया है।

"दीनबंधु" अर्थात् श्री मोहनभाई की चंद पंक्तियाँ देखिए -

माँ भारती पुकारती, दिल की किवाड़ें खोल दो।
इस राष्ट्र के उत्थान में तुम पूर्ण शक्ति जोड़ दो।।[1]

---

1. समय की पुकार - श्री मोहनभाई भावसार "दीनबंधु" - पृ0 60

श्री रामअवधेशजी के शब्दों में -

"मानव हो धर्म हमारा, मानव हो कर्म हमारा ।
भारत का कण-कण, जन-जन हो हमें प्राण सा प्यारा"।।[1]

श्री काबराजी ने भी देशभक्ति के कुछ काव्य लिखे हैं, जैसे -

मनमोहन सा देश हमारा, जय भारत, जय देश हमारा ।[2]

क्षणबोध : क्षणबोध आधुनिक कविता का मुख्य भाव रहा है । यह बोध शाश्वत बोध का विरोधी अर्थ नहीं देता अपितु शाश्वत को पकड़ने की यथार्थ प्रक्रिया है । क्षणों में विभक्त जीवन, उसकी व्यथा, उसका उल्लास, क्षणों में लक्षित मनःस्थिति और क्षणों में स्फुरित कोई भी सत्य छोटा नहीं है । अनुभूति विरहित, पीड़ाहीन इतिहास असत्य है, अमहत्वपूर्ण है । अतः आधुनिक कविता अनुभूति प्रेरित गहरे क्षणों, प्रसंगों और स्थितियों को उसकी समग्र आन्तरिकता के साथ पकड़ती है । यही कारण है कि जीवन के छोटे से छोटे, सामान्य से सामान्य और विशिष्ट से विशिष्ट प्रसंगरूप आधुनिक कविता में नया अर्थ पा रहे हैं । वस्तुतः आधुनिक कविताएँ कुछ क्षणों, प्रसंगों और लघु दृश्यों को आकार प्रदान करती हुई कतिपय संगत-असंगत बिम्बों के माध्यम से क्षणों की परिधि में जीवन के समूचे तूफान को बाँधने का सफल प्रयास करती है ।

जीवन क्षणभंगुर है । मृत्यु ही एक मात्र सत्य है । फिर स्थायित्व क्षणिकत्व में अन्तर समझकर क्यों न चिरस्थायी कार्य करें एवं मृत्यु का भय क्यों ?

जीवन जिया जाता नहीं मौत की आड़ में रहकर
मौत यदि सत्य है, जीवन भी हकीकत है ।[3]

नदी हंसी थी, घरौंदे बनाने पे मेरे तुम्हारे ।[4]

---

1. धरैवेति : श्री रामअवधेश त्रिपाठी "कामना" - पृ० 69
2. आज यौवन ने पुकारा देश को : डॉ० किशोर काबरा - पृ० 24
3. बाकी सफर के साथी : सुनन्दा भावे - पृ० 9
4. हाइकु संग्रह : डॉ० भगवतशरण अग्रवाल - शाश्वत क्षितिज - पृ० 181

क्षणवाद का विकास अस्तित्ववादी दर्शन की भूमिका पर हुआ है । इस दर्शन के आधार पर प्रत्येक क्षण की स्वतंत्र सत्ता है । इस कारण प्रत्येक क्षण का महत्व ग्राह्य है । मनुष्य क्षणों की पृथकता में से उन सभी को अपनाता है जो ग्राह्य भी है और अग्राह्य भी है । कारण, उसकी मान्यता है कि जो क्षण जिस रूप में सामने है, दुबारा उसी रूप में सामने नहीं आ सकता है । प्रत्येक क्षण अपने में सम्पूर्ण है और यथार्थ की गतिशीलता में अभिन्न है ।

दलित काव्य

आधुनिक काल में हमें कई नई प्रवृत्तियाँ भी दृष्टिगत होती है जैसे जयसिंह "व्यथित" का प्रबन्ध काव्य - "दलितों का मसीहा" में इस मसीहा ने सार्वकालिक दलित वर्ग की पीड़ा के अन्तर में पैठ स्वप्नों से आगे बढ़, उन्नत बन शोषकों के सामने वैचारिक विद्रोह छेड़ा ।

स्वाभिमान को जीवन समझो उसके बिना न जीना है ।
आसमानों का गरल भयंकर उस को कभी न पीना है ।।[1] - जयसिंह"व्यथित"

दलित चेतना के लिए डॉ0 आम्बेडकर ने अथक परिश्रम किए । उन्होंने अपने पुस्तक "दलितों का मसीहा" में दलित चेतना को ही उभारा है । उन्होंने अपनी अनुभूति की व्यथा से व्यथित हो कर लिखा है कि -

अरमानों की लाश उठी थी अगम निगम सब भूला था ।
छुआछूत के फन्दों पर वह फाँसी जैसे झूला था ।।[2]

भीमराव की विद्रोही चेतना को यहाँ दो टूक भाषा दी है -

सड़ी व्यवस्था सामाजिक जो उस को मिल फटकारो तुम
तुम से बढ़ कर और न कोई दुनिया को ललकारो तुम ।[3]

इस प्रकार गु. का. आ. हि. का. भाव एवं विचारगत नई प्रवृत्तियों का महत्वपूर्ण संवाहक बन पड़ा है ।

---

1. रैन बसेरा : "एक पारदर्शी करुणा का दस्तावेज" - प्रो0 डॉ0 द्वारिका प्रसाद सांयीहार - पृ0 20
2. रैन बसेरा
3. रैन बसेरा